I J C R M
International Journal of Contemporary Research In Multidisciplinary

*Research Article*

# चंबल संभाग के नगरों का ऐतिहासिक विवेचन

**कमलेश बैरवा**
इतिहास विभाग, सम्राट विक्रमादित्य विश्वविद्यालय, उज्जैन, मध्य प्रदेश, भारत

**Corresponding Author:** * कमलेश बैरवा

**DOI:** https://doi.org/10.5281/zenodo.20758360

## सारांश

चंबल संभाग मध्यप्रदेश का एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्र है, जिसमें मुख्यतः मुरैना, भिण्ड तथा श्योपुर जिले सम्मिलित हैं। यह क्षेत्र प्राचीन काल से राजनीतिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों का केंद्र रहा है। चंबल नदी के तटवर्ती नगरों ने विभिन्न राजवंशों एवं शासकों के प्रभाव में अपनी विशिष्ट पहचान निर्मित की। प्रस्तुत शोध पत्र में चंबल संभाग के प्रमुख नगरों के ऐतिहासिक विकास, सांस्कृतिक संरचना, राजनीतिक परिवर्तनों तथा सामाजिक परिस्थितियों का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है। अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि चंबल क्षेत्र केवल बीहड़ों एवं डकैत समस्या तक सीमित नहीं रहा, बल्कि यह क्षेत्र स्थापत्य कला, वीर परंपरा, धार्मिक आस्थाओं तथा सांस्कृतिक धरोहरों के लिए भी अत्यंत प्रसिद्ध रहा है।

**Manuscript Information**

- **ISSN No:** 2583-7397
- **Received:** 06-05-2026
- **Accepted:** 17-06-2026
- **Published:** 19-06-2026
- **IJCRM:**5(3); 2026: 1007-1009
- **©2026, All Rights Reserved**
- **Plagiarism Checked:** Yes
- **Peer Review Process:** Yes

**How to Cite this Article**

कमलेश बैरवा. चंबल संभाग के नगरों का ऐतिहासिक विवेचन. Int J Contemp Res Multidiscip. 2026;5(3):1007-1009.

**Access this Article Online**

www.multiarticlesjournal.com

**मूल शब्द:** चंबल संभाग,चंबल नदी (चर्मण्वती,) ऐतिहासिक विकासमुरैना ,भिण्ड, श्योपुर, सबलगढ़ दुर्ग, अंबाह, ऐतिहासिक नगर, सांस्कृतिक विरासत, स्थापत्य कला, गुर्जर-प्रतिहार काल.


© 2026 कमलेश बैरवा. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

## 1. प्रस्तावना

भारत के मध्य भाग में स्थित चंबल संभाग ऐतिहासिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण क्षेत्र माना जाता है। चंबल नदी के कारण इस क्षेत्र को प्राचीन काल से ही सामरिक एवं आर्थिक महत्व प्राप्त हुआ। प्राचीन ग्रंथों में चंबल नदी को "चर्मण्वती" नाम से संबोधित किया गया है।[2] महाभारत काल में भी इस क्षेत्र का उल्लेख मिलता है। चंबल नदी के बीहड़, दुर्गम भू-भाग तथा प्राकृतिक संरचना ने इसे ऐतिहासिक संघर्षों का केंद्र बनाया। यही कारण है कि विभिन्न राजवंशों एवं साम्राज्यों ने इस क्षेत्र पर नियंत्रण स्थापित करने का प्रयास किया।

चंबल संभाग के नगरों का विकास विभिन्न ऐतिहासिक कालों में हुआ। मुरैना, भिण्ड, श्योपुर, अंबाह तथा सबलगढ़ जैसे नगर प्राचीन एवं मध्यकालीन इतिहास के महत्वपूर्ण केंद्र रहे हैं। गुप्तकाल में यहां सांस्कृतिक एवं प्रशासनिक स्थिरता दिखाई देती है, जबकि मध्यकाल में तोमर, कछवाहा तथा भदौरिया राजपूतों का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।[3] मुगल काल में यह क्षेत्र सामरिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण बन गया क्योंकि उत्तर भारत से दक्कन जाने वाले मार्गों का नियंत्रण इसी क्षेत्र से होता था। बाद में मराठों तथा अंग्रेजों ने भी यहां अपनी प्रशासनिक व्यवस्था स्थापित की।[4]

## 2. शोध के उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य चंबल संभाग के नगरों के ऐतिहासिक विकास का विश्लेषण करना है। इसके अंतर्गत क्षेत्र की सामाजिक, सांस्कृतिक तथा राजनीतिक परिस्थितियों का अध्ययन किया गया है। साथ ही विभिन्न राजवंशों एवं शासकों के प्रभाव तथा नगरों की वर्तमान ऐतिहासिक स्थिति का मूल्यांकन भी इस शोध का प्रमुख उद्देश्य है।

## 3. शोध विधि

इस शोध पत्र में ऐतिहासिक एवं वर्णनात्मक शोध पद्धति का उपयोग किया गया है। अध्ययन के लिए द्वितीयक स्रोतों का प्रयोग किया गया है, जिनमें इतिहास संबंधी पुस्तकें, शोध पत्र, जिला गजेटियर, अभिलेखीय स्रोत तथा पुरातात्त्विक रिपोर्टें सम्मिलित हैं। तथ्यों का विश्लेषण तुलनात्मक एवं व्याख्यात्मक पद्धति के आधार पर किया गया है।[5]

### मुरैना नगर का ऐतिहासिक विवेचन

मुरैना चंबल संभाग का प्रमुख नगर है, जिसका इतिहास अत्यंत प्राचीन है। यहां स्थित मितावली, पदावली तथा बटेश्वर मंदिर समूह प्राचीन भारतीय स्थापत्य कला के उत्कृष्ट उदाहरण हैं। बटेश्वर मंदिर समूह गुर्जर-प्रतिहार काल की स्थापत्य परंपरा को प्रदर्शित करता है।[6] मुरैना क्षेत्र में प्राप्त शिलालेखों एवं मंदिर अवशेषों से यह प्रमाणित होता है कि यह क्षेत्र धार्मिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से अत्यंत समृद्ध रहा है।

मध्यकाल में मुरैना क्षेत्र पर तोमर तथा जाट शासकों का प्रभाव रहा। मुगल काल में यह क्षेत्र सामरिक गतिविधियों का महत्वपूर्ण केंद्र बना। स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान भी यहां क्रांतिकारी गतिविधियां संचालित हुईं। चंबल के बीहड़ों के कारण यह क्षेत्र लंबे समय तक डकैत समस्या से प्रभावित रहा, किंतु वर्तमान समय में यह क्षेत्र तेजी से विकास की दिशा में अग्रसर है।[7]

### भिण्ड नगर का ऐतिहासिक विवेचन

भिण्ड नगर का इतिहास भी अत्यंत गौरवपूर्ण रहा है। माना जाता है कि इस नगर का नाम "भिण्डी ऋषि" के नाम पर पड़ा।[8] यह क्षेत्र प्राचीन काल से सैन्य एवं राजनीतिक गतिविधियों का केंद्र रहा है। मध्यकाल में भदौरिया राजपूतों का यहां विशेष प्रभाव दिखाई देता है। भिण्ड क्षेत्र में अनेक प्राचीन मंदिर, दुर्ग एवं धार्मिक स्थल स्थित हैं, जो इसकी ऐतिहासिक समृद्धि को प्रमाणित करते हैं।

मुगल शासन के समय भिण्ड सामरिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण था। मराठा शासन के दौरान यहां प्रशासनिक गतिविधियां संचालित होती थीं। स्वतंत्रता संग्राम में भी भिण्ड के लोगों ने महत्वपूर्ण योगदान दिया। यहां की सामाजिक संरचना में ग्रामीण परंपराओं एवं वीर संस्कृति का विशेष प्रभाव दिखाई देता है।[9]

### श्योपुर नगर का ऐतिहासिक विवेचन

श्योपुर नगर राजस्थान की सीमा के समीप स्थित है तथा इसका इतिहास राजपूत शासन से जुड़ा हुआ है। यहां स्थित श्योपुर दुर्ग मध्यकालीन स्थापत्य कला का उत्कृष्ट उदाहरण माना जाता है।[10] श्योपुर क्षेत्र में आदिवासी संस्कृति एवं लोक परंपराओं का विशेष प्रभाव दिखाई देता है। वन संपदा तथा प्राकृतिक संसाधनों के कारण यह क्षेत्र आर्थिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण रहा है।

श्योपुर क्षेत्र में लोक संस्कृति, धार्मिक परंपराएं तथा मेलों का विशेष महत्व है। वर्तमान समय में यह क्षेत्र ऐतिहासिक पर्यटन एवं सांस्कृतिक संरक्षण की दृष्टि से विकसित हो रहा है। यहां की ऐतिहासिक धरोहरें चंबल संभाग की सांस्कृतिक पहचान को सुदृढ़ बनाती हैं।[11]

### सबलगढ़ एवं अंबाह का ऐतिहासिक महत्व

सबलगढ़ का दुर्ग चंबल क्षेत्र की महत्वपूर्ण ऐतिहासिक धरोहरों में गिना जाता है। यह दुर्ग राजपूत एवं मराठा स्थापत्य शैली का मिश्रित उदाहरण प्रस्तुत करता है।[12] अंबाह क्षेत्र धार्मिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण माना जाता है। यहां प्राप्त प्राचीन शिलालेख एवं मंदिर इस क्षेत्र की ऐतिहासिक प्राचीनता को प्रमाणित करते हैं।

चंबल संभाग की सामाजिक एवं सांस्कृतिक विशेषताएं

चंबल क्षेत्र की संस्कृति लोक परंपराओं से समृद्ध रही है। यहां के लोकगीत, लोकनृत्य, मेले तथा धार्मिक आयोजन सामाजिक जीवन का महत्वपूर्ण भाग हैं। यहां की संस्कृति में राजपूत वीरता, ग्रामीण परंपराएं तथा धार्मिक आस्थाओं का विशेष प्रभाव दिखाई देता है।[13]

चंबल क्षेत्र में हिंदी एवं ब्रज भाषा का प्रभाव अधिक है। यहां का लोक साहित्य वीर रस से परिपूर्ण है। धार्मिक दृष्टि से भी यह क्षेत्र महत्वपूर्ण है क्योंकि यहां अनेक प्राचीन मंदिर एवं तीर्थ स्थल स्थित हैं। सामाजिक जीवन में पारंपरिक मूल्यों एवं सामुदायिक संबंधों का विशेष महत्व रहा है।

## 4. निष्कर्ष

अध्ययन से स्पष्ट होता है कि चंबल संभाग का इतिहास अत्यंत समृद्ध एवं बहुआयामी रहा है। यह क्षेत्र केवल बीहड़ों एवं डकैत समस्या के कारण ही प्रसिद्ध नहीं रहा, बल्कि इसकी ऐतिहासिक धरोहरें, स्थापत्य कला, सांस्कृतिक परंपराएं तथा राजनीतिक गतिविधियां इसे विशेष


© 2026 कमलेश बैरवा. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

महत्व प्रदान करती हैं। मुरैना, भिण्ड एवं श्योपुर जैसे नगरों ने विभिन्न ऐतिहासिक कालों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वर्तमान समय में चंबल संभाग ऐतिहासिक पर्यटन एवं सांस्कृतिक संरक्षण की दृष्टि से महत्वपूर्ण क्षेत्र बनता जा रहा है। अतः आवश्यकता है कि यहां की ऐतिहासिक धरोहरों का संरक्षण एवं प्रचार-प्रसार किया जाए ताकि आने वाली पीढ़ियां इस समृद्ध इतिहास से परिचित हो सकें।[14]

## संदर्भ ग्रंथ सूची


1. शर्मा केडी. मध्यप्रदेश का इतिहास. भोपाल: हिंदी ग्रंथ अकादमी; 2015. पृ. 112.
2. त्रिपाठी राधावल्लभ. भारतीय इतिहास एवं संस्कृति. वाराणसी; 2010. पृ. 87.
3. सिंह हरिशंकर. मध्यभारत के ऐतिहासिक नगर. नई दिल्ली; 2018. पृ. 145.
4. जैन कैलाशचंद्र. मध्यकालीन भारत का इतिहास. जयपुर; 2016. पृ. 210.
5. मध्यप्रदेश जिला गजेटियर. मुरैना. भोपाल: प्रकाशन विभाग. पृ. 54.
6. भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण. वार्षिक प्रतिवेदन. नई दिल्ली: भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण; 2019. पृ. 63.
7. मिश्रा रामगोपाल. चंबल घाटी का इतिहास. आगरा; 2012. पृ. 176.
8. मध्यप्रदेश जिला गजेटियर. भिण्ड. भोपाल: प्रकाशन विभाग. पृ. 92.
9. सक्सेना वीके. चंबल क्षेत्र की सांस्कृतिक परंपराएं. ग्वालियर; 2019. पृ. 121.
10. यादव रामनारायण. मध्यप्रदेश की ऐतिहासिक धरोहरें. भोपाल; 2021. पृ. 98.
11. सिंह हरिशंकर. मध्यभारत के ऐतिहासिक नगर. नई दिल्ली; 2018. पृ. 167.
12. मिश्रा रामगोपाल. चंबल घाटी का इतिहास. आगरा; 2012. पृ. 201.
13. सक्सेना वीके. चंबल क्षेत्र की सांस्कृतिक परंपराएं. ग्वालियर; 2019. पृ. 143.
14. शर्मा केडी. मध्यप्रदेश का इतिहास. भोपाल: हिंदी ग्रंथ अकादमी; 2015. पृ. 225.


**Creative Commons (CC) License**

This article is an open-access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution–Non-commercial–No Derivatives 4.0 International (CC BY-NC-ND 4.0) license. This license permits sharing and redistribution of the article in any medium or format for non-commercial purposes only, provided that appropriate credit is given to the original author(s) and source. No modifications, adaptations, or derivative works are permitted under this license.

**About the Author**

**कमलेश बैरवा** सम्राट विक्रमादित्य विश्वविद्यालय, उज्जैन (मध्य प्रदेश) के इतिहास विभाग से संबद्ध शोधार्थी हैं। उनकी अकादमिक रुचि भारतीय इतिहास, सामाजिक-सांस्कृतिक अध्ययन तथा ऐतिहासिक अनुसंधान पद्धतियों में है। वे इतिहास के विविध आयामों पर शोध एवं लेखन कार्य में सक्रिय हैं तथा ज्ञान के प्रसार हेतु निरंतर प्रयासरत हैं।


© 2026 कमलेश बैरवा. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/